चाल कांवड़ ठा ले आजा | By Ashish Chandra Shastri |

चाल कांवड़ ठा ले आजा
चाल कांवड़ ठा ले आजा
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या

जो कांवड़ लेने जाता है
जो मन में है वर पाता
तेरे मन में है जो पाले
तेरे मन में जो है पाले
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या
चाल कांवड़ ठा ले आजा
चाल कांवड़ ठा ले आजा
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या

भोले के दर जो आता है
भंडारे भर ले जाता है
तू भी आज़माले आजा
तू भी आज़माले आजा
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या
चाल कांवड़ ठा ले आजा
चाल कांवड़ ठा ले आजा
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या

वा के शीश गंग की धारा है
और गल सर्पन की माला है
ये भगता के रखवाले
ये भगता के रखवाले
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या
चाल कांवड़ ठा ले आजा
चाल कांवड़ ठा ले आजा
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या

गंगा जल अमृत की धारा
तेरा कष्ट काट देगी सारा
तू अपने रोग मिटाले
तू अपने रोग मिटाले
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या
चाल कांवड़ ठा ले आजा
चाल कांवड़ ठा ले आजा
के सोचे भगत तू

खड़्या खड़्या

चाल हर की पैड़ी जाएंगे
वहां बम बम बोल नहाएंगे
हर की पैड़ी चाल आजा
हर की पैड़ी चाल आजा
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या
चाल कांवड़ ठा ले आजा
चाल कांवड़ ठा ले आजा
के सोचे भगत तू
खड़्या खड़्या

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9a%e0%a4%be%e0%a4%b2-%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%82%e0%a4%b5%e0%a4%a1%e0%a4%bc-%e0%a4%a0%e0%a4%be-%e0%a4%b2%e0%a5%87-%e0%a4%86%e0%a4%9c%e0%a4%be-by-ashish-chandra-shastri/